हेरिएट बीचर स्टो

डेविड, चित्र: कोलिन,

हिंदी: विदूषक

"मैं अपनी ज़िन्दगी व्यर्थ में बेकार गंवाना नहीं चाहती," हेरिएट बीचर स्टो ने लिखा. शायद इसीलिए उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में बहुत सार्थक काम किए – पहले एक टीचर जैसे और बाद में एक लेखिका की हैसियत से. उन्होंने ज़िन्दगी भर दूसरों की मदद की.

उन्होंने एक बेहद सफल किताब लिखी *"अंकल टोम्स केबिन".* इस पुस्तक में उन्होंने गुलामी और दासता की वहशियत को उजागर किया. उस किताब को पढ़ कर बहुत से लोग द्रवित हुए और उन्होंने गुलामी के खिलाफ अपनी आवाज़ उठाई. *"अंकल टोम्स केबिन"* को पढ़कर गुलामी के खिलाफ एक ज़ोरदार जनभावना बनी और उससे अब्राहम लिंकन को, राष्ट्रपति पद का चुनाव जीतने में मदद मिली. किताब छपने के बाद ही 4-साल का गृहयुद्ध शुरू हुआ जिससे गुलामी समाप्त हुई.

हेरिएट बीचर स्टो सबके लिए न्याय चाहती थीं और लोगों की ज़िन्दगी में बदलाव लाना चाहती थीं. हेरिएट बीचर स्टो अपने समय में एक हेरोइन मानी जाती थीं और वो आज भी सबके लिए एक प्रेरणा का स्रोत हैं.

हेरिएट बीचर स्टो

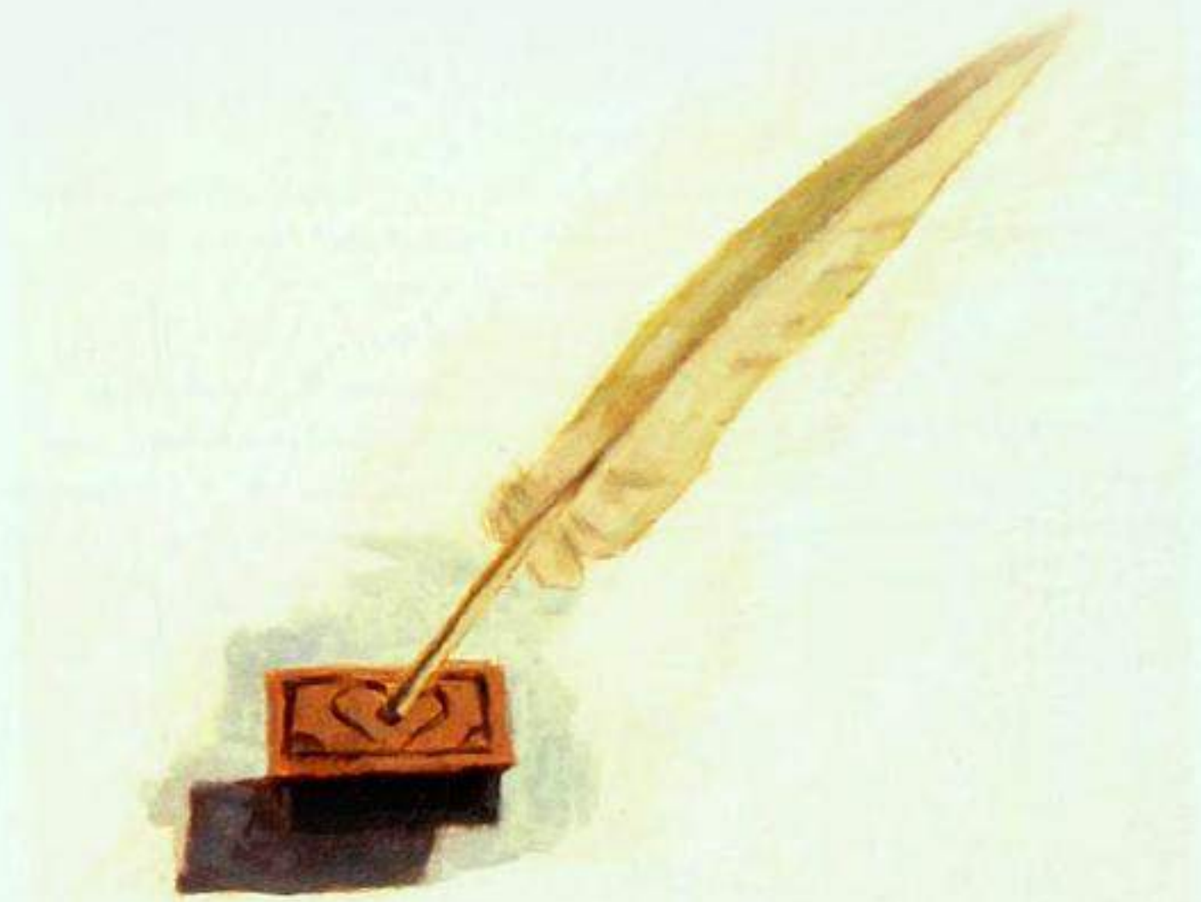

डेविड, चित्र: कोलिन,

हिंदी: विदूषक

1862 में जब राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन पहली बार हेरिएट बीचर स्टो से मिले, तब उन्होंने हाथ मिलाने के बाद उनसे कहा, "तो आप ही वो छोटी सी महिला हैं जिनकी वजह से इतना बड़ा युद्ध शुरू हुआ."

हेरिएट बीचर स्टो ने *"अंकल टोम्स केबिन"* पुस्तक लिखी थी. वो किताब अपने समय की बेस्ट-सेलर थी. उस पुस्तक को पढ़ने के बाद बहुत से लोगों को गुलामी से नफरत हुई और वे गृह-युद्ध में लड़ने के लिए प्रेरित हुए.

हेरिएट बीचर स्टो का जन्म 14 जून, 1811 को लिचफील्ड, कनेक्टिकट में हुआ. वो रोक्साना और लयमैन बीचर की नौ में से सातवीं संतान थी. रोक्साना और लयमैन के पांच बेटे और चार बेटियां थीं.

हेरिएट की माँ बड़ी समझदार और शांत महिला थीं. उन्हें किताबों का बहुत शौक था. पर हेरिएट अपनी माँ के साथ बहुत कम समय ही रह पाईं. 1816 में, रोक्साना बीचर का तपेदिक (टी.बी.) से देहांत हो गया. उस समय हेरिएट की उम्र सिर्फ पांच साल की थी.

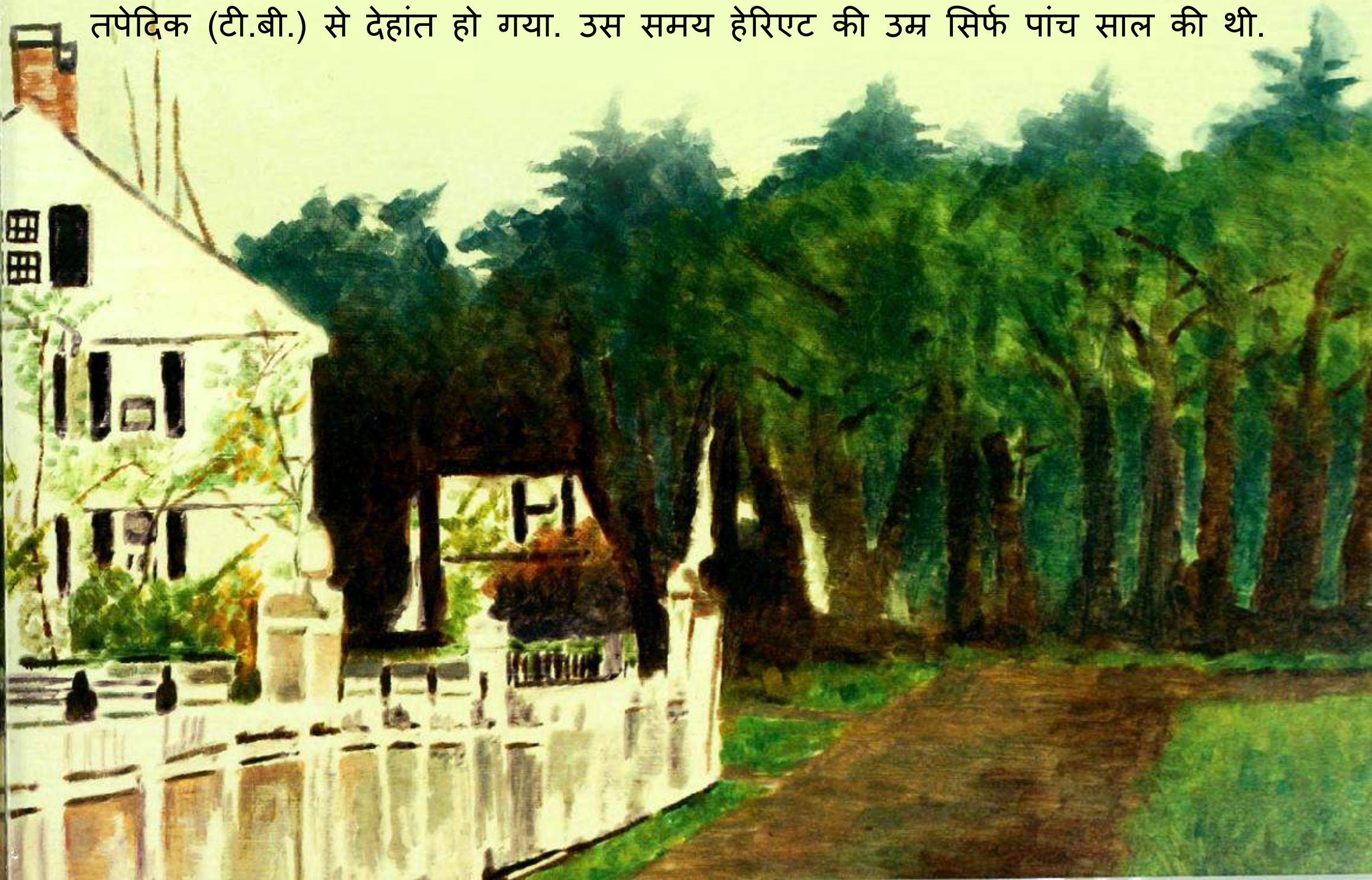

लयमैन बीचर एक ओजस्वी पादरी थे. वो एक कठोर पालक थे और उन्हें बेटियों की बजाए बेटों की इच्छा थी. वो बेटों को पादरी बनने की ट्रेनिंग देना चाहते थे जिससे कि उनके बाद वो पादरी का काम ज़ारी रख सकें. “काश की मेरे बेटा होता!” हेरिएट की पैदाइश पर उन्होंने यह शब्द कहे.

रोक्साना बीचर के देहांत के तुरंत बाद लयमैन बीचर ने हेरिएट पोर्टर से शादी की. हेरिएट बीचर के अनुसार उसकी नई माँ “अति-सुन्दर और बहुत न्यायप्रिय थीं. पर वो कठोर थीं और बच्चों से एकदम सही व्यवहार की अपेक्षा करती थीं.” लयमैन और उनकी दूसरी पत्नी के तीन बच्चे हुए.

हेरिएट बीचर बहुत छोटी, नाज़ुक,
चुप और शर्मीली लड़की थी. अक्सर
वो अपने ही सपनों में खोई रहती थी.
पर कभी-कभी वो एकदम चंचल,
जिंदा और ऊर्जा से भरी होती थी.
हेरिएट को पढ़ने का बहुत शौक था.
उसे एक बार अपने पिता की किताबों
में *"अरेबियन नाइट्स"* की एक प्रति
मिली. उसने उसे बार-बार पढ़ा.

1824 में तेरह साल की हेरिएट
तीस मील दूर हार्टफोर्ड, कनेक्टिकट
गई. वहां उसने *हार्टफोर्ड फीमेल*
सेमिनरी में पढ़ाई की. हेरिएट की
बड़ी बहिन कैथरीन, उसकी संचालक
थीं.

हेरिएट को लिखना बहुत पसंद था. जब वो स्कूल में थी तभी उसे इस बात का एहसास हो गया था कि उसमें लिखने का हुनर था. अपनी इस कुशलता का उसने अच्छा उपयोग करने की योजना बनाई. “मैं व्यर्थ की जिंदगी जीना नहीं चाहती,” उसने अपने भाई को लिखा.

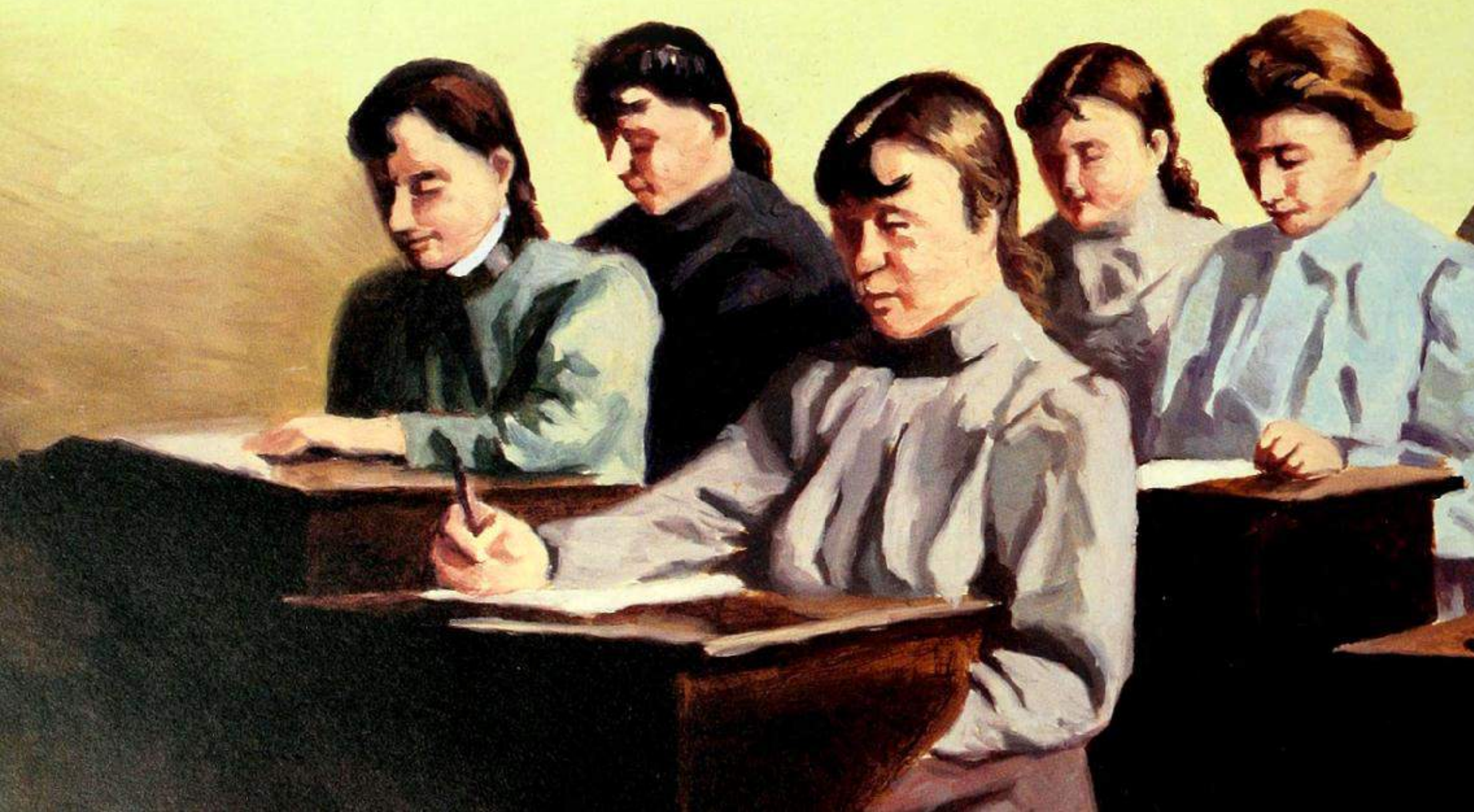

हेरिएट का दिमाग बहुत तेज़ था और उसकी याददाश्त भी बहुत अच्छी थी. सोलह साल की उम्र में ही वो स्कूल में पढ़ाने लगी. उसके कई छात्र खुद उसकी उम्र के थे.

1832 में लयमैन बीचर, लेन थियोलोजिकल सेमिनरी, सिनसिनाटी, ऑहियो के प्रेसिडेंट नियुक्त हुए. उसके बाद उनका परिवार ऑहियो शिफ्ट हुआ. सिनसिनाटी और ऑहियो मुक्त राज्य थे. वहां पर गुलामी पर पाबन्दी थी. पर ऑहियो नदी के उस पार केंटकी में गुलामी बरकरार थी.

शुरू में हेरिएट ने अख़बारों में गुलामी की ख़बरें पढ़ीं. एक सिनसिनाटी अखबार के सम्पादकीय में लिखा था, "नदी के घाट पर "एमिग्रांट" नाम की एक नाव थी. उसमें माल की जगह सिर्फ गुलाम भरे थे जिन्हें वर्जिनिया और केंटकी में खरीदा गया था, जिससे उन्हें दक्षिण के राज्यों में बेंचा जा सके." संपादक ने आगे लिखा कि "गुलामों की खरीद-फरोख्त करने वालों ने आँसूओं की नदी बहाई थी. गुलाम जंजीरों से बंधे थे और उनके शरीर से खून बह रहा था."

सिनसिनाटी में हेरिएट को अखबारों में इश्तहार दिखे, जिनमें भागे हुए गुलामों को पकड़वाने के लिए पुरुस्कार का वादा भी था. कुछ *"अबोलिनिस्ट"* – जो गुलामी ख़त्म के खिलाफ थे उनको क़त्ल करने पर भी पुरुस्कार का ऐलान था.

फिर 1833 में, जब सेमिनरी में गर्मियों की छुट्टियाँ थीं तब हेरिएट ने खुद गुलामों की दयनीय हालत को देखा. उसने गुलाम मालिकों की ज्यादती और उनका दुर्व्यवहार भी देखा. उस प्रत्यक्ष अनुभव का हेरिएट बीचर पर बहुत गहरा असर पड़ा.

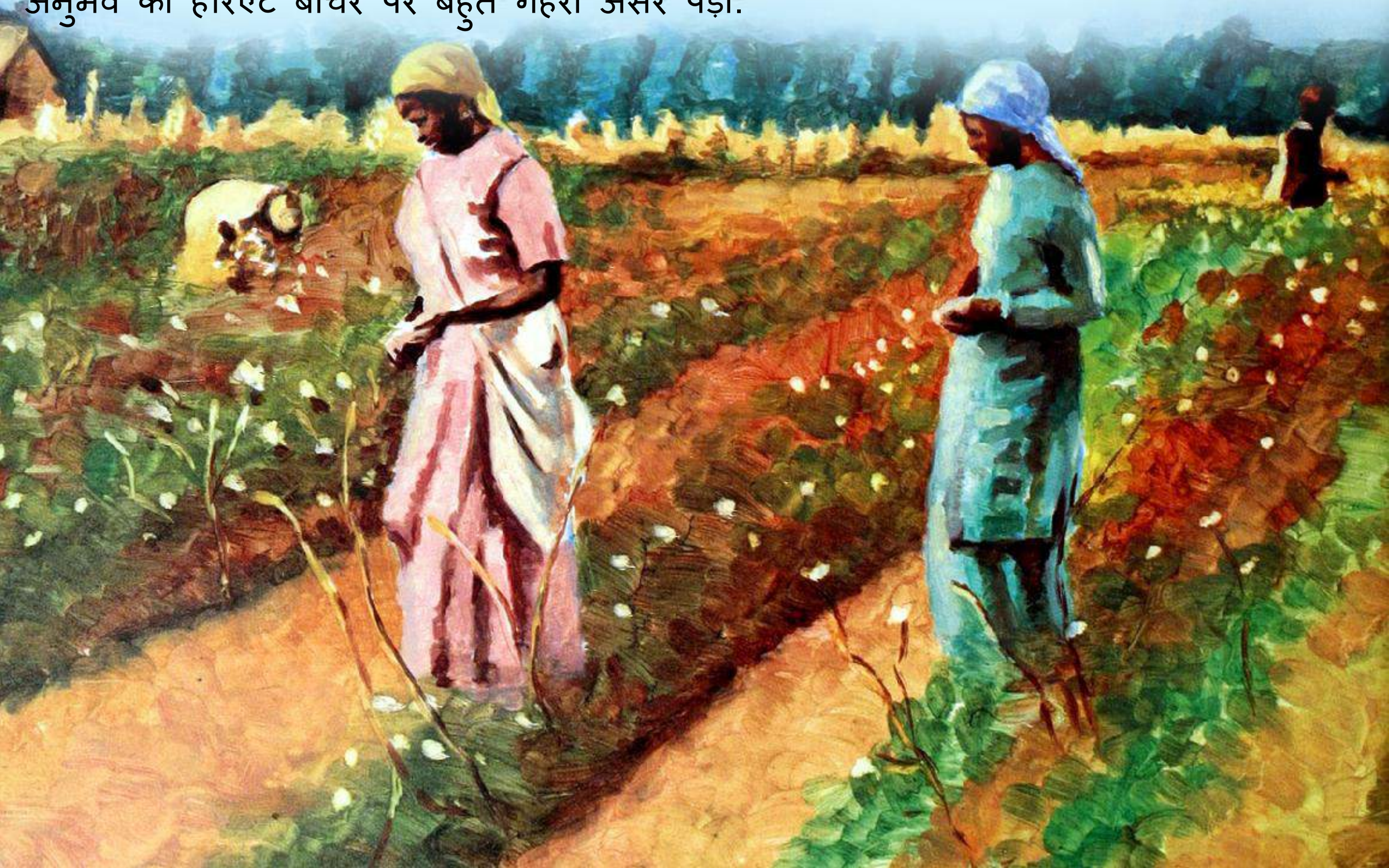

पतझड़ में सेमिनरी में एक नए टीचर कैल्विन और उनकी पत्नी एलिजा स्टो रहने को आए. जल्द ही हेरिएट और एलिजा अच्छे दोस्त बन गए. जब एलिजा अचानक बीमार पड़ी और उसकी मृत्यु हुई तो हेरिएट को बहुत दुःख हुआ.

हेरिएट और कैल्विन स्टो दोनों ने उस गहरे सदमे को साथ-साथ सहा. इससे वो दोनों एक-दूसरे के बहुत निकट आए और 6 जनवरी, 1836 को उन दोनों ने शादी की. हेरिएट और कैल्विन स्टो के सात बच्चे हुए – एलिजा, हेरिएट, हेनरी, फ्रेडरिक, जोर्जियना, समुएल और चार्ल्स.

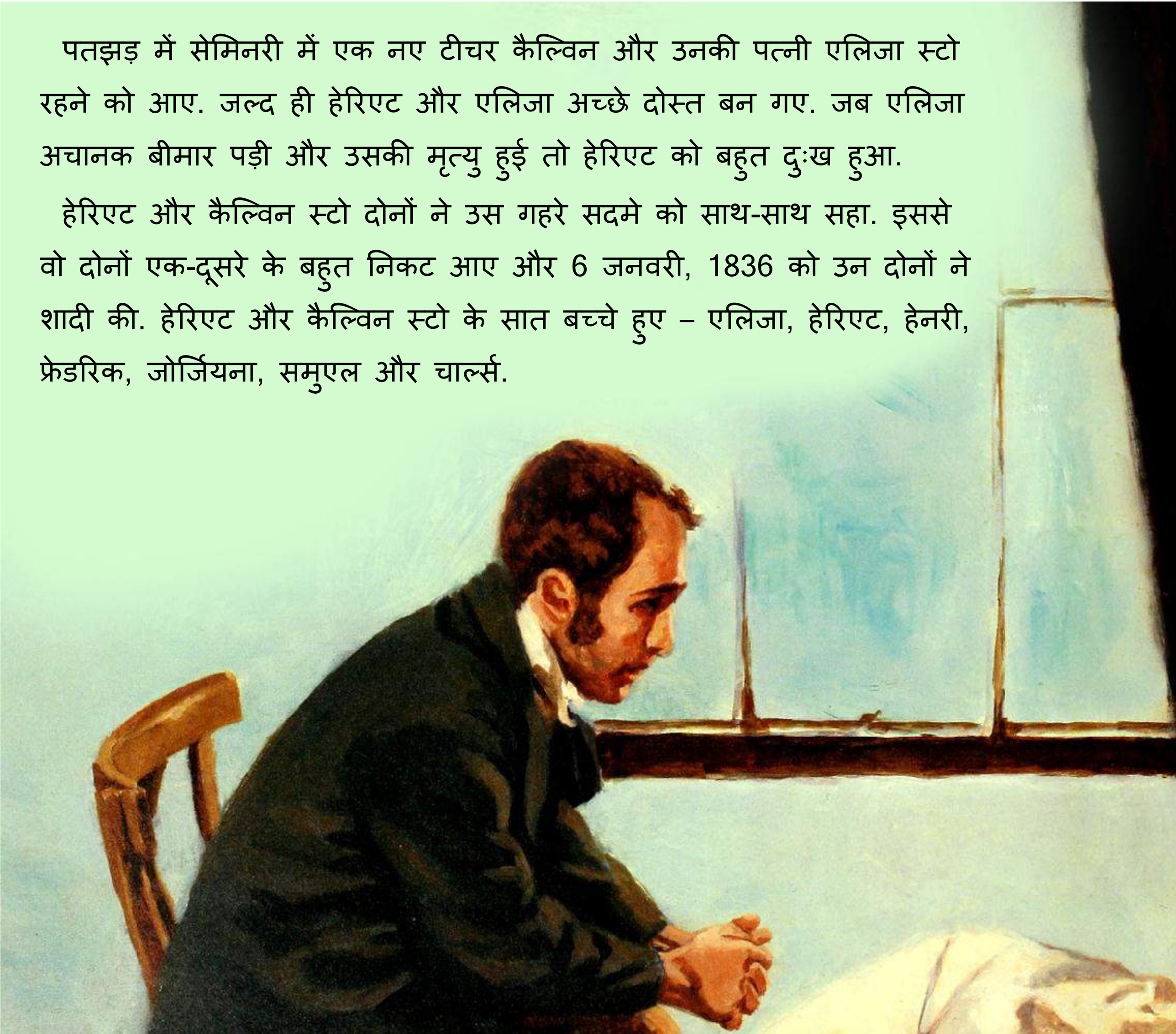

कभी-कभी हेरिएट और कैल्विन एक-दूसरे से बहुत प्रेम करते. “अगर तुम मेरे प्रिय पति नहीं होते,” हेरिएट ने उसे लिखा, “तो मैं ज़रूर तुम्हारे प्रेम में फंस जाती.” पर कभी-कभी वो एक-दूसरे से बहुत लड़ते-झगड़ते भी थे.

“अगर कोई चीज़ अपने स्थान पर न हो या सही समय पर न की जाए, तो उससे मुझे बेहद गुस्सा आता है,” कैल्विन ने हेरिएट को लिखा, “और मुझे लगता है कि तुम बहुत दिल लगाकर घर की चीजें इधर-उधर फेंकती हो.”

कैल्विन ने एक और शिकायत की, “जब तुम किसी एक चीज़ पर अपना ध्यान केन्द्रित करती हो तो तुम्हें लगता है कि दुनिया में सिर्फ वही एक चीज़ करने लायक है.” हेरिएट के लिए “वो एक चीज़” उसका लेखन था.

हेरिएट ने भूगोल की एक पाठ्य-पुस्तिका लिखी. उसने कहानियां, और अख़बारों और पत्रिकाओं के लिए ढेरों लेख लिखे. 1843 में उसकी कहानियों का संकलन पहली बार एक किताब के रूप में छपा.

कैल्विन ने हेरिएट को लिखने के लिए प्रोत्साहित भी किया. “मेरी प्रिय,” उसने हेरिएट को लिखा जब वो न्यू-यॉर्क में थी, “तुम एक साहित्यिक व्यक्ति हो. तुम्हारे भाग्य में लेखक बनना ही लिखा है.”

1850 में कैल्विन ने बोदोइन कॉलेज, ब्रन्सविक में पढ़ाने की नौकरी स्वीकार की. उसके बाद स्टो परिवार मेन चला गया.

उसके अगले साल हेरिएट ने एक कहानी लिखनी शुरू की – *"अंकल टोम्स केबिन".* कहानी एक बूढ़े गुलाम टॉम, और उसके क्रूर मालिक साइमन लेग्री, के बारे में थी. हेरिएट ने यह कहानी साप्ताहिक किश्तों में, एक गुलामप्रथा विरोधी अखबार *"नेशनल एरा"* के लिए लिखी. पहले उसे लगा कि पूरी कहानी तीन-चार किश्तों में ही ख़त्म हो जाएगी. पर अंत में कहानी ख़त्म होने में पूरे चालीस हफ्ते लगे. 1852 में वे सभी किश्तें संकलित होकर, एक किताब के रूप में छपी.

उस किताब में साइमन लेग्री, चाहता था कि टॉम उसे दो भगोड़े गुलामों की छिपने की जगह बताए. पर टॉम ने अपना मुंह बंद रखा और उसकी जमकर पिटाई हुई. "मैं तुम्हारे अन्दर खून की एक-एक बूँद गिनूंगा," लेग्री ने टॉम से कहा, "मैं तुम्हारे खून की एक-एक बूँद तब तक चूसूंगा जब तक तुम मुझे सच नहीं बताओगे!" अंत में पिटाई से टॉम की मृत्यु हुई.

"मैं तुम्हें माफ़ करता हूँ," मरते समय टॉम ने लेग्री से कहा. "मैं तहेदिल से तुम्हें माफ़ करता हूँ!"

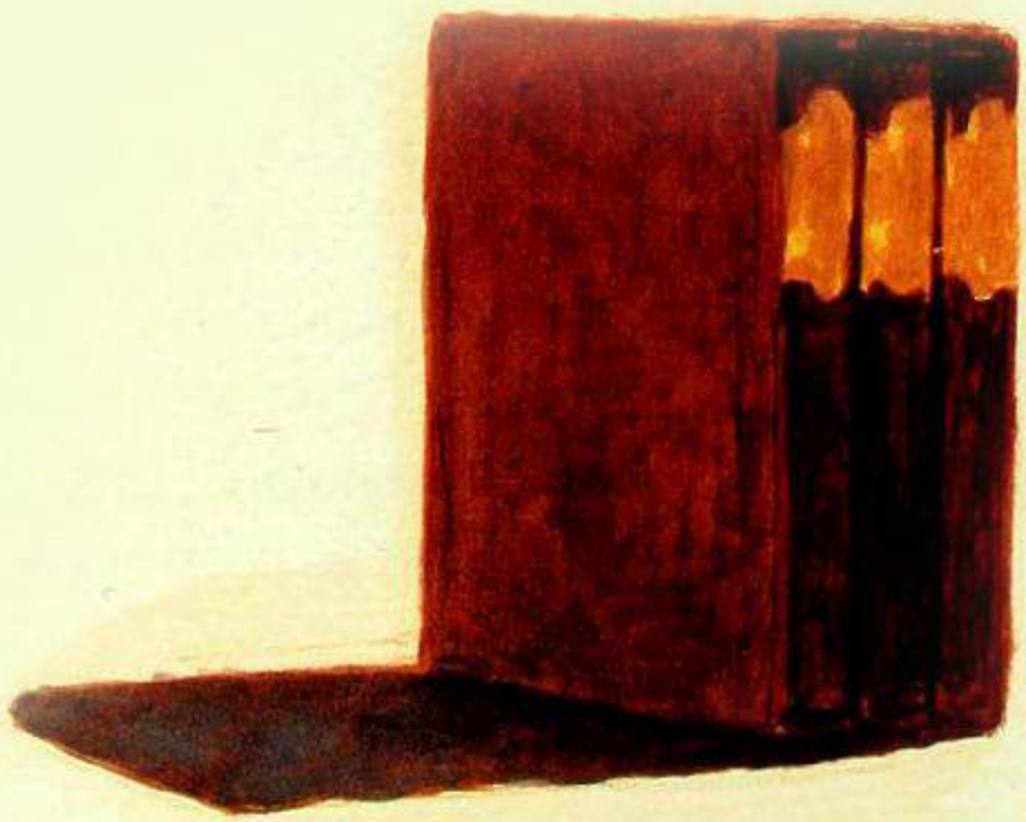

UNCLE TOM'S
CABIN
“अंकल टोम्स केबिन”

वो किताब तुरंत “हिट” हुई. लाखों लोगों ने गुलामी की विभीषिका और वहशियत को टॉम, एलिजा और *“अंकल टोम्स केबिन”* के अन्य पात्रों से अनुभव किया. जिन लोगों ने पहले गुलामी प्रथा के अन्याय के बारे में कभी सोचा तक नहीं था वे अब गुलामी की बेइंसाफी से तिलमिला उठे.

इतना निश्चित है, उस किताब से लोगों के दिलों में गुलामी के प्रति सख्त नफरत पैदा हुई और उससे राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के चुनाव जीतने में आसानी हुई. हेरिएट बीचर की किताब *“अंकल टोम्स केबिन”* अमरीकी गृह-युद्ध का निश्चित रूप से एक कारण बनी.

हेरिएट बीचर स्टो ने अन्य किताबें, लेख, कहानियां और कवितायेँ भी लिखीं, पर उनमें से कोई भी *"अंकल टोम्स केबिन"* जैसी शक्तिशाली नहीं थी.

1852 को स्टो परिवार रहने के लिए अंडोवर, मेसाचुसेट्स चला गया. कैल्विन को अंडोवर थियोलोजिकल सेमिनरी में, प्रोफेसर की नौकरी मिली. 1863 में कैल्विन वहां से रिटायर हुआ और उसके बाद पूरा परिवार फिर हार्टफोर्ड, कनेक्टिकट वापिस आया.

1866 में कैल्विन का देहांत हो गया. उसके बाद से हेरिएट बहुत कम ही घर से बाहर निकलती थीं. 1 जुलाई, 1896 में हेरिएट का भी देहांत हुआ.

छोटी, पतली-दुबली हेरिएट बीचर स्टो – जिन्हें लोग *"लिटिल लेडी"* बुलाते थे, ने पूरे राष्ट्र को गुलामी के अन्याय से आगाह किया. उन्होंने अमेरिकी लोगों के भविष्य का निर्माण किया.

लेखक का नोट

टॉम, हेरिएट बीचर स्टो की किताब का हीरो किसी का "रोल मॉडल" नहीं हो सकता. कुछ लोगों के अनुसार *"अंकल टोम्स केबिन"* एक नस्लवादी किताब थी. चाहें लोग टॉम के बारे में कुछ भी सोचें पर इस पुस्तक ने अमरीका में गुलाम प्रथा को समाप्त करने में एक महत्वपूर्ण रोल निभाया.

1853 में एक साल में, अमरीका में *"अंकल टोम्स केबिन"* पुस्तक की 3-लाख से ज्यादा प्रतियाँ बिकीं.

1860 में न्यू-यॉर्क के सेनेटर विलियम सेवार्ड और मेसाचुसेट्स के सेनेटर चार्ल्स सुमनेर ने कहा कि अब्राहम लिंकन का राष्ट्रपति के पद पर चुनाव का काफी श्रेय *"अंकल टोम्स केबिन"* पुस्तक को जाता है.

1899 में किर्क मुनरो ने अपनी किताब *"लाइव्स एंड डीड्स ऑफ़ आवर सेल्फ-मेड मेन"* में हेरिएट बीचर स्टो के बारे में लिखा कि वो "अमरीका की सबसे श्रेष्ठ महिलाओं" में से एक थीं, "और उन्होंने अमरीकी लोगों के भविष्य का निर्धारण किया."

महत्वपूर्ण तारीखें

1811	14 जून, लिचफील्ड, कनेक्टिकट में जन्म
1816	माँ रोक्साना फुट बीचर का तपेदिक (टी. बी.) से देहांत.
1824	बहन द्वारा संचालित हार्टफोर्ड फीमेल सेमिनरी में दाखिला.
1832	परिवार के साथ सिनसिनाटी, ऑहियो में तबादला.
1836	कैल्विन स्टो से शादी.
1850	परिवार के साथ ब्रून्सविक, मेन में तबादला.
1851	*"अंकल टोम्स केबिन"* पहले किश्तों में छपी और अगले साल पुस्तक के रूप में.
1852	परिवार का अंडोवर, मेसाचुसेट्स में तबादला.
1862	राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन से भेंट.
1863	परिवार का हार्टफोर्ड, कनेक्टिकट में तबादला.
1896	1 जुलाई को हार्टफोर्ड, कनेक्टिकट में देहांत.